#१३. वास्तविकता -१

दिनांक -6/10/2011

सह-अस्तित्व में ही विकासक्रम, विकास का प्रकाशन है | दूसरी भाषा में जागृतिक्रम, जागृतिका प्रमाण है | जागृतिपूर्वक अभिव्यक्तिओं का नाम मानव परम्परा में जागृति है | समझदारी का स्वरुप सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण, सहअस्तित्व में विचार प्रमाण, सहअस्तित्व में व्यवहार प्रमाण है | ये तीनों प्रमाण सहअस्तित्व में ही प्रमाणित होने पर मानव जागृति का दावेदार होता है | जीव चेतना में मानव जागृति का दावेदार नहीं है | इस क्रम में अर्थात इस प्रकार से नियति क्रम में सर्वमानव, सर्व देश कालीन मानव, जागृतिपूर्वक ही अपने स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार का प्रयोग करता है | जीव चेतना क्रम में केवल रासायनिक, भौतिक वस्तुओं के आधार पर स्वत्व, स्वतंत्रता का अधिकार बताना चाहता है | इसमें वितंडावाद होना ही रहा है | इस प्रकार शरीर यात्रा का समय निर्धारित है, जीवन नित्य है, जन्म-मृत्यु एक घटना है जीवन के लिये | इस तथ्य के आधार पर हम मानव यह निश्चय कर सकते हैं कि शरीर यात्रा कुछ समय के लिये है, जीवन यात्रा सर्वकालिक है | सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान में मानवीयतापर्ण आचरण ज्ञान, जीवन ज्ञान समाया रहता है | इसी प्रकार के सोच विचार, कार्य-व्यवहार ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व को प्रमाणित करता है | यही भ्रम मुक्ति, अपराध मुक्ति का उपाय है |

जीव चेतना विधि से जीने में अपराध के अतिरिक्त कुछ कर ही नहीं पाता है | इसे भली प्रकार से देखा गया है | शिक्षा में लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद होने के कारण मानव अपराध से मुक्त कैसे होगा? इसके उत्तर में नकारात्मक ही बनता है | यही जीव चेतना क्रम में सीमा सुरक्षा में भागीदारी करता हुआ हर मानव इस प्रकार के अपराध को वैध मानता है | इस प्रकार की भविष्य रचना विधि से मानव का अपराधमुक्त होने का रस्ता बंद है | इस क्रम में यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं किइसमें मानवत्व का रास्ता नहीं है | मानवत्व में जीने के लिये विकसित चेतना ही एकमात्र शरण है; जिससे ही अपराधमुक्त होना, भ्रममुक्त होना निश्चित है | सम्पूर्ण अपराध जीव चेतना विधि से ही घटित होता है | अपराधिक शिक्षा व्यवस्था में न्याय मिलने वाला नहीं है | अभी तक किसी भी उच्चतम न्यायालय में न्याय का स्पष्टीकरण नहीं हो पाया है, फैसले का स्पष्टीकरण हुआ है | सम्पूर्ण फैसले में कहीं न कहीं झूठ का पुट है ही | इस प्रकार कहाँ से न्याय मिलने वाला है |

विकसित चेतना विधि से मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयता का ज्ञान होता है, और प्रमाणित होते हैं | मानवीयतापूर्वक मानव सत्य एवं समाधान सहज समझ सहित न्याय में जी पाता है | यही मुख्य मुद्दा है | मानवीयतापूर्वक जीना ही एकमात्र पद्धति है | इसके मूल में मानव ज्ञानावस्था में होना अध्ययनगम्य हो चुका है | ज्ञानावस्था में प्रमाणित होने के अर्थ में ही संवेदनाएं कार्यरत हैं | संज्ञानशीलता के अर्थ में ही संवेदनाएं तृप्त होते हैं | संज्ञानशीलता विकसित चेतना ही है | मानवीयतपूर्ण आचरण ही विकसित चेतना का प्रमाण है जो न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, स्वास्थ्य सुलभता, विनिमय सुलभता एवं शिक्षा सुलभता ही है | यही मानव परम्परा का मूल सूत्र है |

यही मानव परम्परा में न्यायपूर्वक जीने का एकमात्र आधार है | जीवों में चेतना विकास नहीं होता है, झाड़, पत्थरों में होना सम्भव नहीं है | इन्हीं सब प्रतीकों में मानव उलझा है | सुलझने का कार्यक्रम मानव चेतना विधि में सम्भव है जिसका

अध्ययन होना सुलभ हो चुका है | इसे हर नर, नारी अध्ययन विधि से परीक्षण कर सकता है | अध्ययन के लिये ही अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतपूर्ण आचरण ज्ञान, जीवन ज्ञान तथा दर्शन रूप में मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्वाद प्रस्तुत किया है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा के रूप में मानव परम्परा को अच्छी तरह से प्रबोधित कर पाता है | इसका अध्ययन कई लोग कर रहे हैं | कई को ऐसा लगता है कि समझ में आ गया है, प्रमाणित करना आवश्यक है | इस क्रम में इतनी बात को यहाँ इंगित करना चाहते हैं कि मानव को सहज रूप में न्याय प्रतीक्षित है | न्याय का समझ मानव चेतना विधि से सम्भव हो चुका है | इसका विशद रूप स्पष्ट होना हर नर,नारी में पाया जाता है | स्पष्ट होने के अर्थ में अध्ययन ही एकमात्र उपाय है | अध्ययन के लिये प्रस्ताव चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से प्रस्तुत है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत